(कविता)
वह औरत है

वह अक्सर चुप रहती है,
पर उसके अंदर बहुत कुछ चलता है,
होंठों पर मुस्कान रहती है
और दिल चुपचाप संभलता है।

हर दिन थोड़ा टूटती है,
फिर खुद ही खुद को जोड़ लेती है,
दुनिया चाहे जितना थका दे,
वह फिर भी हिम्मत ओढ़ लेती है।

उसकी आँखों में नींद कम
और ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा होती हैं,
फिर भी सबके लिए जीते-जी
अपनी ख्वाहिशें आधी होती हैं।

कभी दर्द छुपाकर हँस देती है,
कभी चुप रहकर सब सह जाती है,
कोई पूछे न पूछे हाल उसका,
वह फिर भी साथ निभाती है।

वह गिरती है, संभलती है,
और चलना नहीं छोड़ती,
ज़िंदगी चाहे जैसे परखे,
वह उम्मीद नहीं तोड़ती।

वह सिर्फ किसी की बेटी या सहारा नहीं,
वह खुद एक पूरी कहानी है,
जिसमें संघर्ष भी है, सपने भी —
और जीने की सच्ची निशानी है।

हाँ, वह औरत है...
नरम भी है, मज़बूत भी,
टूटती जरूर है कभी-कभी,
पर हर बार पहले से ज्यादा मज़बूत उठती है।

मुस्कान कुमारी
गणित विभाग
2025-29
250492